ایاتها ٨ ﴿٩٤ سُوْرَةُ اَلَمْ نَشْرَحْ مَكِّيَّةٌ ١٢﴾ رکوعها ١

सूरए अलम नशरह़ मक्किय्या है, इस में आठ आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह़्म वाला[1]

اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ﴿١﴾ وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ﴿٢﴾ الَّذِيْۤ اَنْقَضَ

क्या हम ने तुम्हारे लिये सीना कुशादा न किया[2] और तुम पर से तुम्हारा वोह बोझ उतार लिया जिस ने तुम्हारी पीठ

ظَهْرَكَ ﴿٣﴾ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ﴿٤﴾ فَاِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ﴿٥﴾ اِنَّ مَعَ

तोड़ी थी[3] और हम ने तुम्हारे लिये तुम्हारा ज़िक्र बुलन्द कर दिया[4] तो बेशक दुश्वारी के साथ आसानी है बेशक दुश्वारी

الْعُسْرِ يُسْرًا ﴿٦﴾ فَاِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ ﴿٧﴾ وَاِلٰى رَبِّكَ فَارْغَبْ ﴿٨﴾ ع

के साथ और आसानी है[5] तो जब तुम नमाज़ से फ़ारिग़ हो तो दुआ़ में[6] मेह्नत करो[7] और अपने रब ही की त़रफ़ रग़बत करो[8]

ایاتها ٨ ﴿٩٥ سُوْرَةُ التِّيْنِ مَكِّيَّةٌ ٢٨﴾ رکوعها ١

सूरए तीन मक्किय्या है, इस में आठ आयतें और एक रुकूअ़ है

फ़रमाई और वोह भी जिन का हु़ज़ूर से वा'दा फ़रमाया। ने'मतों के ज़िक्र का इस लिये हुक्म फ़रमाया कि ने'मत का बयान करना शुक्र गुज़ारी है। **1 :** "सूरए अलम नशरह़" मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, आठ आयतें और सत्ताईस कलिमे, एक सो तीन ह़र्फ़ हैं। **2 :** या'नी हम ने आप के सीने को कुशादा और वसीअ़ किया हिदायतो मा'रिफ़त और मौइ़ज़तो नुबुव्वत और इल्मो हिक्मत के लिये, यहां तक कि आ़लमे ग़ैबो शहादत उस की वुस्अ़त में समा गए और अ़लाइक़े जिस्मानिय्या, अन्वारे रूह़ानिय्या के लिये मानेअ़ न हो सके और उ़लूमे लदुन्निय्या व हु़क्मे इलाहिय्यह व मआ़रिफ़े रब्बानिय्या व ह़क़ाइक़े रह़मानिय्या सीनए पाक में जल्वा नुमा हुए। और ज़ाहिरी शर्हे़ सद्र भी बार बार हुवा, इब्तिदाए उ़म्र शरीफ़ में और इब्तिदाए नुज़ूले वह़्य के वक़्त और शबे मे'राज जैसा कि अह़ादीस में आया है, इस की शक्ल येह थी कि जिब्रीले अमीन ने सीनए पाक को चाक कर के क़ल्बे मुबारक निकाला और ज़र्रीं त़श्त में आबे ज़मज़म से ग़ुस्ल दिया और नूर व ह़िक्मत से भर कर उस को उस की जगह रख दिया। **3 :** इस बोझ से मुराद या वोह ग़म है जो आप को कुफ़्फ़ार के ईमान न लाने से रहता था या उम्मत के गुनाहों का ग़म जिस में क़ल्बे मुबारक मश्ग़ूल रहता था, मुराद येह है कि हम ने आप को मक़्बूलुश्शफ़ाअ़त कर के वोह बारे ग़म दूर कर दिया। **4 :** ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते जिब्रील से इस आयत को दरयाफ़्त फ़रमाया तो उन्हों ने कहा : अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि आप के ज़िक्र की बुलन्दी येह है कि जब मेरा ज़िक्र किया जाए मेरे साथ आप का भी ज़िक्र किया जाए। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि मुराद इस से येह है कि अज़ान में, तक्बीर में, तशह्हुद में, मिम्बरों पर, ख़ुत़्बों में। तो अगर कोई अल्लाह तआ़ला की इबादत करे हर बात में उस की तस्दीक़ करे और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की रिसालत की गवाही न दे तो येह सब बेकार, वोह काफ़िर ही रहेगा। क़तादा ने कहा कि अल्लाह तआ़ला ने आप का ज़िक्र दुन्या व आख़िरत में बुलन्द किया, हर ख़त़ीब, हर तशह्हुद पढ़ने वाला, اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ के साथ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ पुकारता है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि आप के ज़िक्र की बुलन्दी येह है कि अल्लाह तआ़ला ने अम्बिया से आप पर ईमान लाने का अ़ह्द लिया। **5 :** या'नी जो शिद्दत व सख़्ती कि आप कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में बरदाश्त फ़रमा रहे हैं इस के साथ ही आसानी है कि हम आप को इन पर ग़लबा अ़त़ा फ़रमाएंगे। **6 :** या'नी आख़िरत की **7 :** कि दुआ़ बा'दे नमाज़ मक़्बूल होती है, इस दुआ़ से मुराद आख़िरे नमाज़ की वोह दुआ़ है जो नमाज़ के अन्दर हो या वोह दुआ़ जो सलाम के बा'द हो, इस में इख़्तिलाफ़ है। **8 :** उसी के फ़ज़्ल के त़ालिब रहो और उसी पर तवक्कुल करो।

www.dawateislami.net